नदी के प्राकृतिक स्वरूप से छेड़खानी बनी तबाही की वजह

पिछले साल की बाढ़ में ऊंचे उठे रिवर बेड से स्थिति और बिगड़ी

सूरत सिंह रावत

उत्तरकाशी। उच्च हिमालयी क्षेत्र का मौसम बदल रहा है। इसका गहन अध्ययन तो वैज्ञानिक करेंगे पर इस क्षेत्र में रहने वाले इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति करते हैं। घाटी से चोटी तक मूसलाधार बारिश के बदलते ट्रेंड तथा रेत बजरी के खजाने की लूट के लिए भागीरथी की जलधारा से छेड़छाड़ ही उत्तरकाशी के तटवर्ती क्षेत्र में तबाही का कारण बना। बीते साल की बाढ़ से ऊंचे उठे रिवर बेड ने भी कोढ़ में खाज का काम किया।

मानसून से पूर्व दो दिन की बरसात से बेगवती भागीरथी में इतना पानी आया कि उत्तरकाशी में अधिकांश बांए किनारे के तटवर्ती निर्माण को अपने में समा लिया। 1978 में भागीरथी में बाढ़ आई। 2012 में भी पहले बार रनोडिया गाड में बादल फटने से इतना मलबा नीचे उतरा कि डबराणी में 8 घंटे भागीरथी का प्रवाह रुकने से झील बन गई। इस झील के टूटने से ही भारी तबाही मची थी। बीते साल भी असी गंगा के जलागम क्षेत्र में बादल फटने से असी गंगा तथा भागीरथी ने भी जमकर तांडव मचाया। इस बार तो दो दिन की बरसात ने ही जल प्रलय की स्थिति उत्पन्न कर दी।

जानकार बताते हैं कि पहले सिर्फ घाटियों में ही मोटी मूसलाधार बारिश होती थी। 10 से 12 हजार फीट की ऊंचाई वाले क्षेत्र में रिमझिम बारिश होती थी। इस बार स्नो लाइन से नीचे घाटी जैसी ही मूसलाधार बारिश देखने को मिली। भागीरथी तथा इसके सहायक नदियों गाड़-गदरों के जलागम क्षेत्र से इसी मूसलाधार बारिश से इतना पानी नीचे आया कि दो दिन में ही बाढ़ जैसे हालत पैदा करके रख दिए।

बीते साल की बाढ़ में असी गंगा तथा भागीरथी का रिवर बेड कई मीटर ऊंचा उठ गया था। गैर सरकारी सूत्रों ने 15 किलोमीटर क्षेत्र में फैले इस रेत बजरी तथा पत्थर की उप खनिज संपदा का आकलन तीन से चार सौ करोड़ किया। इस खनिज संपदा को बेचा तो नहीं गया, लेकिन बाढ़ सुरक्षा कार्यों में लगे ठेकेदारों ने मनमाने ढंग से नदी का बहाव बदलकर उपखजिन को उठाने की छूट दे दी। प्रशासन तथा कार्यदायी विभाग राजनीतिक पहुंच वाले रसूखदार ठेकेदारों के चाकर बनकर रह गए।

'भागीरथी में मलबा उड़ेलना भी बड़ी बजह'

गंगोत्री तथा सीमावर्ती नेलांग घाटी का दौरा करने वाले पर्यावरणविद् चंडीप्रसाद भट्ट इसके लिए ऊपरी हिस्सों में सड़क निर्माण से निकले मलबे को जाड़ गंगा तथा भागीरथी में उड़ेलना भी एक कारण बता रहे हैं। उनका कहना है कि निर्माण के नाम पर अनियंत्रित विस्फोटकों तथा भारी मशीनों से घायल वाटर शेड क्षेत्रों को कुछ समय तक आराम देने की जरूरत है। बार-बार भागीरथी तथा असी गंगा में ही बाढ़ क्यों आती है। इसके अध्ययन के लिए तटस्थ वैज्ञानिकों की कमेटी बनाई जानी चाहिए।